डॉ० पूनम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
आर० एन० कॉलेज

class — M.A. Semester II
Paper — VI
पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा
(Western Epistemology)

class — T.D.C. Part I के लिए भी
Paper — II
तत्वमीमांसा
(Metaphysics)

Topic — संसक्तता सिद्धान्त
(सामंजस्य)
(Coherence Theory)

संसक्तता सिद्धान्त (सामंजस्य) (Coherence Theory)

ज्ञानमीमांसा के अन्तर्गत ज्ञान के स्वरूप एवं प्रामाणिकता का विवेचन किया जाता है। व्यावहारिक स्तर पर ज्ञान की सत्यता के स्वरूप (Nature) एवं उसकी जाँच (Test) का बहुत स्पष्ट भेद नहीं रहता है, किन्तु सैद्धान्तिक स्तर पर इन दोनों के बीच अक्सर होता है। ज्ञान की सत्यता के स्वरूप एवं उसकी जाँच की कसौटी से जुड़े हुए कई महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं। इनमें एक संसक्तता (सामंजस्य) सिद्धान्त है।

इस संसक्तता सिद्धान्त के अनुसार सत्यता सामंजस्य है। सामंजस्य का अर्थ है — किसी भी ज्ञान का किसी तन्त्र (System) के साथ पूर्ण रूप से संगत होना। ज्ञान की अभिव्यक्ति तर्कवाक्यों के द्वारा होती है। सत्यता तर्कवाक्य का स्वाभाविक गुण है। किसी तर्कवाक्य की सत्यता किसी पूर्वस्थापित सिद्धान्त के साथ संगति पर आधारित होती है। यदि तर्कवाक्य किसी पूर्वस्थापित सिद्धान्त के साथ सुसंगत है तो उसे सत्य कहा जाएगा अन्यथा उसके असंगत रहने पर असत्य होंगे। इस सिद्धान्त के अनुसार तर्कवाक्य का वास्तविकता या तथ्य के साथ संगत होना आवश्यक नहीं होता। ज्ञान जिन तर्कवाक्यों से बना होता है, वे आन्तरिक रूप से सम्बद्ध होते हैं तथा एक तर्कवाक्य तार्किक रूप से दूसरे में आधारित होता है। इसलिए ज्ञान की सत्यता के लिए संगति के अलावा 'परस्पर निर्भरता' (Mutual depen-dence) का होना आवश्यक है। कोई तर्कवाक्य अपने क्षेत्र के अन्य तर्कवाक्यों के समूह के साथ संगत होने पर सत्य होता है तथा असंगत होने पर असत्य होता है। ऐसा सम्बन्ध मुख्य रूप से गणित एवं तर्कशास्त्र में पाया जाता है।

संसक्तता सिद्धान्त या सामंजस्यवाद के समर्थकों का मानना है कि कोई भी तर्कवाक्य अन्य तर्कवाक्यों से सम्बद्ध होता है। इसलिए उस तर्कवाक्य की समस्या निजी न होकर पारिवारिक होती है। जैसे — कोई व्यक्ति सन्तान के सापेक्ष पिता कहा जाता है। अनुभव के क्षेत्र में भी सामंजस्य के आधार पर तर्कवाक्यों को कभी-कभी सत्य माना जाता है। किन्तु इस क्षेत्र में तर्कवाक्य आंशिक सत्य एवं आंशिक असत्य होते हैं। इसका मुख्य कारण है कि इस क्षेत्र में अनन्त तर्क-वाक्य होते हैं। इन सभी को जान पाना सीमित बुद्धिवाले मानव के लिए सम्भव नहीं है। इसलिए साधारण ज्ञान के क्षेत्र में सत्यता में मात्रा-भेद किया जा सकता है। किसी तर्कवाक्य A को किसी अन्य तर्कवाक्य B की अपेक्षा

कम या अधिक संगत कहा जा सकता है। किन्तु पूर्ण या निरपेक्ष ज्ञान पूर्ण सत्य है। इस ज्ञान में सभी सम्भव तर्कवाक्य एक-दूसरे से पूर्णतः संगत होते हैं।

इस मत के समर्थक मुख्य रूप से बुद्धिवादी एवं निरपेक्ष प्रत्ययवादी विचारक रहे हैं। बुद्धिवादी विचारकों में स्पिनोजा, लाइबनित्स आदि प्रमुख हैं। इस मत का विरोध प्रभाव निरपेक्ष प्रत्ययवादी विचारकों पर रहा है। जैसे - हीगल, ब्रैडले आदि। आधुनिक विचारकों में कुछ तार्किक अनुभववादी इस मत के समर्थक रहे हैं। जैसे — ऑटो न्यूरॉथ (Otto Neurath), कार्ल हेंपेल (Karl Hempel) आदि। इन विचारकों का कहना है कि कोई तर्कवाक्य निरपेक्ष रूप में सत्य नहीं होता, बल्कि उसका आधार किसी सुस्थापित वैज्ञानिक ज्ञान के साथ सामंजस्य है।

निरपेक्ष प्रत्ययवादी ब्रैडले के अनुसार निरपेक्ष सत्य आत्म-संगत, व्याघातरहित पूर्ण सत्ता है। किन्तु हमारे अनुभव का जगत आभास युक्त, व्याघातपूर्ण एवं आंशिक सत्य है। जैसे — आत्मा शरीर की तुलना में अधिक संगत है, किन्तु ईश्वर की तुलना में कम संगत है।

भारतीय विचारधारा में आचार्य शंकर के अद्वैत वेदान्त में इस मत का समर्थन किया गया है। इस मत के अनुसार ज्ञान को पूर्णतः व्याघातरहित होना चाहिए। पूर्ण ज्ञान अबाधित एवं निरपेक्ष है। जैसे — स्वप्न जाग्रत अवस्था द्वारा असत्य सिद्ध होता है। इसीप्रकार संसार या हमारी जाग्रत अवस्था निरपेक्ष आत्मा द्वारा असत्य सिद्ध होता है।

इससे स्पष्ट है कि ज्ञान की प्रत्येक इकाई ज्ञान की दूसरी इकाई के साथ संगति के आधार पर सत्य होती है।

मूल्यांकन — यह सिद्धान्त निरपेक्ष सत्य या ज्ञान की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। किन्तु व्यावहारिक स्तर पर सत्य को निर्धारित करना इस सिद्धान्त के द्वारा कठिन है। इसलिए इस सिद्धान्त में अनेक दोष हैं। वे हैं —

(1) इस सिद्धान्त में 'सामंजस्य' के स्वरूप को स्पष्ट नहीं किया गया है। यह इस सिद्धान्त की सबसे बड़ी त्रुटि है।

(2) इस सिद्धान्त में 'चक्रक दोष' (Fallacy of arguing in circle) पाया जाता है। इसमें तर्कवाक्य की सत्यता का आधार उसका सामंजस्य है तथा उसके सामंजस्य के आधार पर तर्कवाक्य को सत्य माना गया है। यह दोषपूर्ण है।

(3) सामंजस्य के आधार पर अनुभव के क्षेत्र में तर्कवाक्य की सत्यता को निर्धारित करना कठिन है। अनुभव जगत में अनन्त तर्कवाक्य होते हैं। इसलिए इस सिद्धान्त के द्वारा उसकी सत्यता निर्धारित नहीं हो पाती।

<u>निष्कर्ष</u> — इस सिद्धान्त की त्रुटियों को देखते हुए बाद के विचारकों ने इस मत में अनेक संशोधन किये। इस सिद्धान्त में सत्यता का निर्धारण बौद्धिक विश्लेषण के आधार पर होता है। इसलिए सत्य का विचार निरपेक्ष एवं परिकल्पनात्मक होता है। किन्तु बाद के विचारकों ने ऐसा माना कि सत्य तर्कवाक्य वैज्ञानिक ज्ञान के साथ संगत होता है।

<u>नोट</u> — विस्तृत अध्ययन के लिए ज्ञानमीमांसा से सम्बद्ध किताबें पढ़ें। जैसे —

(1) दर्शनशास्त्र की रूपरेखा — प्रो० राजेन्द्र प्रसाद
(2) तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा — केदार नाथ तिवारी

—— X —— X ——